''तेरा पुत्र जीवित है''
(4:46-54)

हार्डिंग कॉलेज में मेरे सीनियर होने के वर्ष के आरम्भ अर्थात 1977 के पतझड़ में एक सप्ताहांत में कई छात्र अमेरिका में सरसी, आरकैंसा से फ्लोरेंस, अलाबामा के लिए सोल-विनिंग (आत्माओं को जीतने वाले) वर्कशॉप में भाग लेने के लिए गए। उस सप्ताहांत मैंने जो सबसे अद्‌भुत बात सुनी और अनुभव की, वह वहां एकत्र हुए हम में से कई लोगों के नायक और एक बुज़ुर्ग मिशनरी ओटिस गेटवुड का प्रभावशाली लैक्चर था। उन्हें मिशन के इस क्षेत्र में तीस से अधिक वर्षों की कठिनाइयों तथा परेशानियों में भी विश्वास में बने रहने पर बोलने के लिए कहा गया था। उस रात उन्होंने अकेलेपन, भाइयों के विरोध, सरकारों द्वारा सताए जाने, प्रियजनों तथा सहकर्मियों की मृत्यु और सुसमाचार को फैलाने में प्रेम के अपने परिश्रम में आने वाली कठिनाइयों के बारे में बताया।

यूरोप में जीवन भर किए गए अपने काम की यादों को साझा करते भाई गेटवुड को सुनना हमारे लिए मन्त्रमुग्ध करने वाला था, परन्तु मुझे उस रात की अन्य बातों में से उनके द्वारा प्रयुक्त यूहन्ना 4:46-54 की आयतें ही याद हैं। इन्टरनेशनल बाइबल कॉलेज के प्रेसिडेंट और लैक्चरशिप के निर्देशक चार्ल्स कॉयल ने भाई गेटवुड को बोलने के लिए आमन्त्रित किया था और सुझाव दिया था कि बाइबल का यह भाग उनके संदेश के लिए उपयुक्त रहेगा। उस संदेश से जिसे ''रात में चलते रहो'' नाम दिया गया था, तब से लेकर बहुत सी मुश्किलों का सामना करने के लिए मुझे आधार मिला है। मैंने इन आयतों को लोगों से निजी बाइबल अध्ययनों में साझा किया है और कब्रिस्तान में लोगों के जीवनों के सबसे कठिन समयों में इन्हें पढ़ा है। पवित्र शास्त्र की ये आयतें सुन्दर, सामर्थपूर्ण, चुनौती भरी और सांत्वना देने वाली हैं; और हमारे इस पाठ का आधार हैं।

निराश पिता (4:46, 47)

सामरियों से मुलाकात के बाद, यीशु गलील में चला गया, जहां उसकी प्रसिद्धि लगातार बढ़ती ही जा रही थी। काना में वापस आने पर जहां उसने पहला चिह्न दिखाया था, यीशु को राजा का एक कर्मचारी मिला जो अपने पुत्र के जीवन के लिए बिनती करने आया था। विश्वास की यात्रा में हमारे लिए इन दो लोगों की बातचीत एक और नमूना देती है।

राजा के उस कर्मचारी के पद या राजनीति के बारे में हम स्पष्ट रूप से बहुत ही कम

जानते हैं। हम इतना जानते हैं कि वह यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले का सिर कटवाने का आदेश देने वाले दुष्ट शासक हेरोदेस टेट्राक, जो हेरोदेस अंतिपास के नाम से प्रसिद्ध था, के राज्य का कर्मचारी था। सत्ता में बैठे लोगों से उसके विशेष सम्बन्धों के कारण हम यह भी अनुमान लगा सकते हैं कि उसका अपना विशेष प्रभाव था।

काना नामक स्थान, जहां यह कर्मचारी यीशु से मिला था, कफ़रनहूम से लगभग बीस मील दूर होगा,[1] जहां वह लड़का बीमार पड़ा था। यह सुनकर कि यीशु काना में है, वह उसके पास यह कहने के लिए गया कि उसके पुत्र को जो ''मरने पर था'' (4:47) चंगा करने के लिए उसके साथ चले। इस आदमी के बारे में मैं ज्यादा तो नहीं जानता, परन्तु इतना अवश्य जानता हूं कि जब किसी पिता का बच्चा इतनी नाजुक स्थिति में हो तो उसे कुछ भी अच्छा नहीं लगता!

कई वर्ष पूर्व, मेरी एक बेटी के खून में इंफेक्शन हो गया जो ठीक ही नहीं हो रहा था। उसके शरीर में जो भी इंफेक्शन था उसे दूर करने के लिए बार-बार ऐंटीबायोटिक दवाइयां दी जा रही थीं, सो बच्चों के डॉक्टर ने हमें उसके रक्त की जांच करवाने के लिए अस्पताल भेजा। किसी ने हमें बताया नहीं, परन्तु हमें पता था कि वे ल्यूकेमिया (श्वेत रक्तता) के लिए टेस्ट कर रहे थे। मेरे जीवन का यह सबसे लम्बा दिन था। दिन में जो कुछ भी हुआ वह एक-एक करके मेरे ध्यान से निकलता जा रहा था। मुझे केवल अपनी छोटी बच्ची की सेहत की ही चिंता थी। परमेश्वर का धन्यवाद है कि उसके रक्त परीक्षणों की रिपोर्ट सही पाई गई, परन्तु मैं उस दिन को कभी नहीं भूलूंगा जब उसका प्राण जाने के भय से सारा संसार मुझसे ''छूट गया'' था।

इस अध्याय में वर्णित पिता हेरोदेस के लिए काम करता था, जिससे लोगों में उसका राजनैतिक प्रभाव होगा। मरकुस रचित सुसमाचार, में एक दिलचस्प क्रॉस रैफरेंस में संकेत मिलता है कि यीशु की हत्या का षड्यंत्र रचने में हेरोदियों का हाथ था। उस घटना के बाद जिसमें यीशु ने सब्त के दिन सूखे हाथ वाले एक आदमी को चंगा किया था, हम पढ़ते हैं, ''तब फरीसी बाहर जाकर तुरन्त *हेरोदियों* के साथ उसके विरोध में सम्मति करने लगे, कि उसे किस प्रकार नाश करें'' (मरकुस 3:6)। यह सम्भव है कि जिस पिता का इस कहानी में उल्लेख है, किसी समय वह यीशु की मृत्यु चाहता हो। परन्तु, यह सब तो राजनीति थी, जब कोई बच्चा मर रहा होता है तो राजनीति किसी काम नहीं आती!

1981 में भी ऐसी ही स्थिति पैदा हो गई थी, जब अमेरिका के राष्ट्रपति रोनाल्ड रीगन को गोली मारी गई थी और उन्हें अस्पताल ले जाया गया था। उन्हें जल्दी से ऑपरेशन के लिए ऑपरेशन थियेटर में ले जाया गया। अपने डॉक्टर को देखकर, राष्ट्रपति ने ऑक्सीजन मास्क उतारते हुए अपने यादगार मज़ाक में पूछा था, ''क्या तुम रिपब्लिकन हो?'' जवाब में डॉक्टर ने ऑक्सीजन मास्क को फिर से लगाते हुए कहा था, ''राष्ट्रपति महोदय आज हम सब रिपब्लिकन ही हैं।'' जब ज़िन्दगी दांव पर लगी हो तो पार्टी के सारे मतभेद पीछे छूट जाते हैं।

इस अध्याय में आगे बढ़ने से पहले उस पिता की बिनती की एक और बात पर ध्यान

देना चाहिए। यीशु के पास आकर वह यीशु से ''बिनती करने लगा'' कि वह घर आकर उसके पुत्र को चंगा करे। यूनानी क्रिया का वाक्य अधूरा है जिसमें निरन्तर क्रिया का संकेत है। अन्य शब्दों में, यह कर्मचारी जो लोगों की नज़र में महत्वपूर्ण व्यक्ति होगा यीशु से अपने पुत्र के प्राण बचाने की भीख मांग रहा था! उसके लिए यीशु अन्तिम आशा थी, सो उसने अपना घमण्ड त्याग कर अपने बच्चे की जान बचाने के लिए इस विवादित और कंगाल रब्बी से अनुरोध किया था।

परवाह करने वाला उद्धारकर्त्ता (4:48-50)

यीशु ने लड़के के पिता की बिनती सुनकर सबसे पहले आस-पास खड़े लोगों को डांट लगाई। उसने कहा, ''जब तक तुम चिह्न और अद्‌भुत काम न देखोगे तब तक कदापि विश्वास न करोगे'' (4:48)। एक बार फिर हम यीशु के रूखे उत्तर से स्तब्ध हो जाते हैं। प्रभु से हमें कोमलता, दिलेरी और आशा बंधाने की उम्मीद होगी परन्तु हमें डांट मिलती है। हम एक बार फिर देखते हैं कि यीशु लोगों को विश्वास की ओर ले जा रहा है और ज़ोर दे रहा है कि वे विश्वास की घटिया दर्जे की नकलों से दूर रहें।[2]

यीशु की डांट से हमें इस पर विचार करने का अवसर मिलता है कि हम दूसरों की सहायता के नाम पर क्या करते हैं। क्या हम सच्चाई के प्रति समर्पित हैं या आराम के प्रति? क्या हमें इस बात की परवाह है कि लोग विश्वास करें या उन्हें भावनात्मक निराशा से निकालना है? मैं अक्सर हैनरी न्यूवेन के इन शब्दों से चेतावनी और डांट लेता हूं:

> सेवक कोई डॉक्टर नहीं होता जिसका मुख्य कार्य दर्द का निवारण करना हो। ... सेवक का मुख्य काम शायद लोगों को गलत कारणों से दुखी होने से बचाना है। बहुत से लोग अपने जीवन में झूठी मान्यता के कारण दुखी होते हैं। वह मान्यता यह है कि कोई भय या अकेलापन, उलझन या संदेह नहीं होना चाहिए। परन्तु ऐसे क्लेशों का सामना केवल मनुष्य के जीवन में आने वाले न टलने वाले दुखों के रूप में समझकर रचनात्मक ढंग से ही हो सकता है। इसलिए सेवकाई एक बहुत बड़ी चुनौती की सेवा है। यह लोगों को अनैतिकता से और पवित्र होने के भ्रमों से निकालती है। यह लोगों को याद दिलाती है कि वे नाशवान और निराश तो हैं, परन्तु अपनी इसी स्थिति को पहचानकर वे स्वतन्त्रता के लिए आते हैं।[3]

मेरा मानना है कि यीशु दुखी पिता और उसके मर रहे बच्चे के लिए सचमुच चिंतित था, परन्तु मेरा विश्वास है कि उनके प्रति इससे भी बढ़कर उसकी चिंता परमेश्वर से उनके सम्बन्ध के बारे में थी। यीशु चाहता था कि वह बच्चा चंगा हो जाए और पिता का दिल न टूटे, परन्तु इससे भी अधिक उसकी इच्छा यह थी कि खोए हुए लोग उद्धार पा लें। यीशु ने देखा कि उस समय राजा के उस कर्मचारी की सबसे बड़ी आवश्यकता उस समय शारीरिक मृत्यु से छुटकारा नहीं बल्कि परमेश्वर था! यीशु ने यह भी देखा कि अपने पुत्र की सम्भावित मृत्यु से इस व्यक्ति को अपनी सबसे बड़ी आवश्यकता की समझ आ गई थी।

आगे बढ़ने से पहले, हम सभी को अपने आपसे यह पूछना चाहिए कि हमारी इस समय की सबसे बड़ी चिंता क्या है। इस समय आपके मन में कौन सी बातें सबसे महत्वपूर्ण हैं? यद्यपि यह आपके लिए महत्वपूर्ण है, परन्तु शायद यह आपकी सबसे बड़ी आवश्यकता नहीं है। परन्तु हो सकता है कि इसी बात से आपको परमेश्वर के लिए अपना मन खोलने की अपनी सबसे बड़ी आवश्यकता का अहसास हो जाए!

यीशु द्वारा लोगों को डांट लगाना बार-बार पिता की इस बिनती से कि ''हे प्रभु, मेरे बालक की मृत्यु होने से पहिले चल'' (4:49) रुक जाता है। शायद इस समय उस व्यक्ति द्वारा अपने पुत्र के बारे में बताने का ढंग कुछ विशेष है। यहां पर उसने आयत 46 और 47 के अधिक सामान्य शब्द *huios* अर्थात ''मेरा पुत्र'' के स्थान पर यूनानी शब्द *paidion* अर्थात ''मेरा छोटा लड़का'' का इस्तेमाल किया। यहां किसी पद या ओहदे की बात नहीं मिलती। यह एक दुखी आदमी की अपने ''छोटे लड़के'' के लिए बिनती करते हुए मन की पीड़ा का चित्रण है।

अंतत: चंगाई के शब्द सरल और स्पष्ट थे। यीशु ने इतना ही कहा, ''जा तेरा पुत्र जीवित है'' (4:50)। अपने उद्देश्य को पूरा करने के लिए उसे कफ़रनहूम तक बीस मील चलने की आवश्यकता नहीं थी। उसने कहा और वह लड़का चंगा हो गया।

विश्वास की रात (4:50-54)

उस पिता की अंधेरी रात यीशु की एक बात से समाप्त हो चुकी थी, या अभी बाकी थी? अपनी आंखों से देखने के लिए कि उसका छोटा लड़का ठीक हो गया है उसे अभी बीस मील दूर जाना था। किसी कारण (शायद इसलिए क्योंकि रात अधिक हो चुकी थी[4] या वह थक चुका था) वह उस रात अपने घर नहीं जा पाया था। अगले दिन उसे वे सेवक मिले, जो उसे यह बताने के लिए आ रहे थे कि उसका पुत्र सचमुच जीवित और ठीक है। जब उसने पूछा कि वह कब चंगा हुआ, तो उन्होंने बताया था, ''कल सातवें घण्टे में उसका ज्वर उतर गया'' (4:52)। उसे याद आया कि उसी समय तो यीशु ने उसे कहा था कि ''तेरा पुत्र जीवित है।''

इस कहानी की बात जो मुझे अपनी ओर खींचती है और जिसके बारे में 1977 में अपने सामर्थपूर्ण संदेश में ओटिस गेटवुड ने बताया था वह यह है कि उस लड़के के पिता ने अपने पुत्र के चंगा होने की प्रतिज्ञा और उस आश्चर्यकर्म की पुष्टि होने के बीच एक रात का समय बिताया था। ''उस मनुष्य ने यीशु की कही हुई बात की प्रतीति की, और चला गया'' था (4:50)। इस पिता के जीवन की उस रात की तस्वीर एक शक्तिशाली आकृति है जिसमें हम सबके लिए जीवन है; हमें प्रतिज्ञा तथा उसके पूरा होने के बीच की रात को झेलना होता है।

रात की परेशानियां और भय दिन के प्रकाश में आने वाली परेशानियों से अधिक जोखिम भरे होते हैं। डरावनी फिल्में अंधेरे में ही बनाई जाती हैं क्योंकि हम अंधेरे से डरते हैं। मैं अंधेरे में बड़ी मुश्किलों को नहीं सह सकता। जब मुझे नींद न आए, या किसी

परेशानी के कारण चिंता में रात को जाग जाऊं, तो मैं उठकर रसोई में जाता हूं, जहां मैं लाइट जलाकर खुली आंखों से अपने संघर्षों पर विचार कर सकता हूं!

वह कर्मचारी घर से बीस मील दूर था, इसलिए हम अनुमान लगा सकते हैं कि उसने आशा के विरुद्ध आशा करते हुए और अपने मन में आने वाले भयों से संघर्ष करते हुए वह रात बिताई होगी। पता नहीं कि वह एक क्षण में आशावादी भरोसे से अगले क्षण संदेह के अंधेरे में कैसे झूल रहा होगा। हमें तो उसका नाम भी मालूम नहीं, परन्तु हम सब इस आदमी को पहचान सकते हैं; क्योंकि हम सबको प्रतिज्ञा और उसके पूरा होने के बीच के रात के समय के संघर्षों का अनुभव है।

नवम्बर 10, 1994 के दिन क्लोडिट जोन्स नामक एक बहुत अच्छी मसीही महिला की कैंसर से लम्बे संघर्ष के बाद मृत्यु हो गई। उसने अपनी बीमारी और पीड़ा का बड़े ही अनुग्रहकारी और अद्‌भुत साहस से सामना किया। उसके पति जैरी और उसके बच्चों को अपने मित्रों सहित उन हज़ारों लोगों के साथ जिन्होंने उसे कभी देखा नहीं था उस अद्‌भुत ढंग से आशीष मिली, जो उसने अपनी बीमारी और मृत्यु से पाई। मृत्यु से एक सप्ताह पूर्व उसने टेलीफोन पर अपनी मां जॉर्जिया डियूबोयस से बात की। यह जानते हुए कि शीघ्र ही उसकी मृत्यु हो जाएगी, क्लोडिट ने अपनी मां से कहा था, ''डैडी और मैं आपकी प्रतीक्षा करेंगे।'' परमेश्वर अपने बच्चों से ऐसी ही प्रतिज्ञा करता है। क्लोडिट के लिए विश्वास अब देखने की बात हो गई है, जबकि हमारे लिए जो प्रतिज्ञा और स्वर्ग में उस प्रतिज्ञा के पूरा होने के बीच के अंधेरे को सहते हैं, यह अभी भी है।

उस परेशान पिता का अनुभव यीशु में हमारे विश्वास के बढ़ने के लिए एक नमूना था। कहानी के आरम्भ में, इस पिता का यीशु में इतना विश्वास था कि वह अपने पुत्र को बचाने के लिए यीशु के पास आकर भीख मांगने लगा। उसका विश्वास सम्भवत: ''मैं अपना कुछ खोना नहीं चाहता'' किस्म का था। फिर यीशु के साथ बात करने के बाद, उसने ''यीशु की कही हुई बात की प्रतीति की'' (4:50)। अंतत:, प्रत्यक्षदर्शियों से सुनकर कि उसका पुत्र जीवित है, ''उसने और उसके सारे घराने ने विश्वास किया'' (4:53)। निराशा भरी उम्मीद से उसके दृढ़ निश्चय तक विश्वास में बढ़ने पर ध्यान दें। उससे पता चलता है कि विश्वास भरोसे पर भरोसा बनाने की कठिन और चूर चूर कर देने वाली प्रक्रिया है।

सारांश

राजा के कर्मचारी और यीशु की इस कहानी को पूरा करने से पहले इस अंतिम सच्चाई पर ज़ोर देने की आवश्यकता है। मैं चाहता हूं कि आप यीशु के चेहरे को बड़े गौर से देखें। उसके चेहरे में देखकर आपकी आशा में ईंधन और भरोसा आपको सही दिशा में ले जाएगा।

सबसे पहले, सच्चाई का चेहरा देखें। यीशु ने इस मुलाकात में दिखाया कि वह नहीं चाहता कि हम में से कोई भी झूठ की ज़िन्दगी बिताए। दुख से हमारे छुटकारे से भी महत्वपूर्ण बात परमेश्वर से हमारा सम्बन्ध है। मसीही होने के कारण, हमें सच्चाई के प्रति अपनी वचनबद्धता से हटने के लिए अपने समाज के पीड़ारहित जीवन के विचार को बीच

में नहीं आने देना चाहिए। हर व्यक्ति के जीवन की सबसे बड़ी बात उनकी आत्मा का उद्धार है। यीशु ने इसी बात को हमेशा सामने रखा; आप और मैं उसकी उपेक्षा नहीं कर सकते।

फिर, दया का चेहरा देखें। यीशु ने बार-बार यह चेहरा दिखाया कि ''वचन देहधारी हुआ,'' इसलिए वह मनुष्य की स्थिति को समझ सकता था। यीशु जानता था कि अनन्तकाल के संदर्भ में उस छोटे लड़के की चंगाई से मृत्यु को केवल थोड़ी देर के लिए ही टाला गया है। बाद में एक दिन, उस लड़के ने मर जाना था। अनन्तकाल के संदर्भ में, मुझे संदेह है कि इससे कोई बड़ा फर्क पड़ा होगा; परन्तु अपने किसी प्रियजन की मृत्यु पर मानवीय जीव बड़े दुखी होते हैं। यीशु उस लड़के के पिता की पीड़ा को समझता था और उसने उसके पुत्र को चंगा करने के लिए करुणा से कार्य किया।

अन्त में, उम्मीद का चेहरा देखें। यीशु ने कभी भी हम सब की हर बीमारी को चंगा करने की प्रतिज्ञा नहीं की परन्तु उसने जाकर हमारे लिए जगह तैयार करने की प्रतिज्ञा अवश्य की (यूहन्ना 14:2)। उसने कभी हमें आराम से सब कुछ देने की प्रतिज्ञा नहीं की, परन्तु हमेशा हमारे साथ रहने की प्रतिज्ञा उसने अवश्य की (मत्ती 28:20)। उसने हमें उस पर भरोसा रखने और जीवन को भयभीत करने वाली रात के समय उसके पीछे चलने के लिए बुलाया है। यूहन्ना ने ऐलान किया, और हमारा विश्वास है कि यीशु हमारे भरोसे के योग्य है!

पाद टिप्पणियां

[1]पृष्ठ 73 पर मानचित्र देखें। [2]देखें 2:23, 24; 6:26. [3]हैनरी जे. एम. न्यूवेन, *द वूंडड हीलर* (गार्डन सिटी, न्यू यार्क: इमेज बुक्स, 1972), 92-93. [4]''सातवां घंटा'' यहूदी समय का दोपहर 1 बजे या रोमी समय शाम 7 बजे होगा।